Jinat

2017

HINDI

(Major)

Paper : 2.2

Full Marks : 80

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए : 1×10=10

   (क) किसने रीतिकाल को 'शृंगारकाल' कहा है?

   (ख) 'छत्रसालदशक' किसकी रचना है?

   (ग) रामकथा पर आधारित केशवदास द्वारा रचित महाकाव्य का नाम क्या है?

   (घ) घनानन्द के प्रेम के आलम्बन कौन हैं?

   (ङ) देव की कविताओं का मूल रस क्या है?

   (च) सेनापति द्वारा प्रणीत किसी एक ग्रंथ का नामोल्लेख कीजिए।

   (छ) 'ललित ललाम' किसकी रचना है?

(ज) 'बिहारी सतसई' किस भाषा में लिखी गई है?

(झ) 'कविकुलकल्पतरु' किसकी रचना है?

(ञ) 'सुजान' कौन है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अति संक्षेप में दीजिए : 2×5=10

(क) "अजौं तर्‌यौना ही रह्यो, श्रुति सेवत इक रंग।" यहाँ 'तर्‌यौना' से क्या तात्पर्य है?

(ख) देव की काव्य-भाषा क्या है? उनकी काव्य-भाषा में और किन बोलियों के शब्द मिलते हैं?

(ग) घनानन्द की कविताओं का मूल भाव क्या है?

(घ) केशवदास की काव्य-भाषा की विशेषता क्या है?

(ङ) भूषण द्वारा रचित कितने ग्रंथों का उल्लेख मिलता है? उनके काव्यों का मूल रस क्या है?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए : 5×4=20

(क) "वाके अति सीतकर तुहूँ सीता सीतकर,
चन्द्रमा सी चन्द्रमुखी सब जग जानिये॥"
—का आशय स्पष्ट कीजिए।

अथवा

"क्षत्रिय ह्वै गुरु लोगन को प्रतिपाल करें।"
—सन्दर्भ स्पष्ट करते हुए यहाँ उल्लेखित क्षत्रिय धर्म के बारे में बताइए।

(ख) अन्योक्ति क्या है? कवि बिहारी द्वारा रचित किसी एक अन्योक्तिपरक दोहे का उल्लेख कीजिए।

अथवा

"भूषण-भारु सँभारि है, क्यों इहि तन सुकुमार।"
यहाँ 'भूषण-भारु सँभारि है' से क्या तात्पर्य है?

(ग) "पर काजहि देह कों धारि फिरौ पेरजन्य जथारथ ह्वै दरसौ।" किसने किससे किस उद्देश्य से यह पंक्ति कही है?

अथवा

चिन्तामणि त्रिपाठी का कवि परिचय प्रस्तुत कीजिए।

(घ) पठित पाठ के आधार पर देव की भक्ति-भावना का परिचय दीजिए।

अथवा

मतिराम के काव्य-सौन्दर्य पर टिप्पणी लिखिए।

4. अधोलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×2=20

(क) टुटै टूटनहारु तरु बायुहि दीजत दोष।
त्यों अब हर के धनुष को हम पर कीजत रोष।
हम पर कीजत रोष कालगति जान न जाई।
होनहार ह्वै रहै मिटै मेरी न मिटाई।

अथवा

लिखन बैठि जाकी सबी, गहि-गहि गरब गरूर।
भए न केते जगत के चतुर चितेरे कूर॥

(ख) झलकै अति सुन्दर आनन गौर छके दृग राजत काननि छ्वै।
हँसि बोलनि मैं छबि-फूलन की बरषा, उर-ऊपर जाति है ह्वै।
लट लोल कपोल कलोल करै, कलकंठ बनी जलजावलि द्वै।
अंग अंग तरंग उठै दुति की, परिहै मनो रूप अबै धर च्वै॥

अथवा

आपस की फूट ही ते सारे हिन्दुवान टूटे,
टूट्यो कुल रावन अनीति अति करते।
पैठिगो पताल बलि बज्रधर ईरषा ते,
टूट्यो हिरन्याक्ष अभिमान चित्त धरते।

5. केशवदास की कविताओं के कलापक्ष पर विचार कीजिए। 10

अथवा

बिहारी की शृंगार-व्यंजना पर प्रकाश डालिए।

6. "घनानन्द प्रेम के उन्मुक्त गायक थे।" पठित कविताओं के आधार पर इस उक्ति की पुष्टि कीजिए। 10

अथवा

भावपक्ष की दृष्टि से देव की कविताओं की समीक्षा कीजिए।

★★★